श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Feb - 2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर 9

शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

क्र.	उत्तर
(१)	अ इ उ ऋ ऌ
(२)	व्यापक विद्या
(३)	शांतिनाथ भ.
(४)	विकलेन्द्रिय
(५)	
(६)	कुल का घमंड
(७)	शैलेशीकरण
(८)	बोहडी
(९)	मुक्तेसर गढ
(१०)	श्रमण संघ
(११)	त्रिभाग न्यून
(१२)	त्यागीयो की
(१३)	पचाने की
(१४)	गति - आगति
(१५)	कनिष्ठ
(१६)	लंकापती
(१७)	वाक्चातुर्य
(१८)	पाप
(१९)	नपूंसक देव
(२०)	सूक्ष्म कायायोग

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

क्र.	उत्तर
(१)	समुच्छिन्न क्रिया
(२)	लाभ मद
(३)	शुद्ध आत्मद्रव्य
(४)	अंतराय कर्म
(५)	भव्य उपासको
(६)	जयसिंह सूरि
(७)	वेदनीय कर्म
(८)	तेउकाय - वायुकाय
(९)	दशार्णभद्रराजर्षि
(१०)	अष्टांग योग
(११)	मध्यकाल
(१२)	~~ऐश्वर्य~~ ऐश्वर्य
(१३)	सूक्ष्मकाय योग
(१४)	हरिया शाह
(१५)	अभिमान
(५)	स्थिरता
(६)	क्षेम
(७)	निरुपद्रवता
(८)	वेद
(९)	तुम जय पाओ
(१०)	एक
(११)	देनेवाली
(१२)	पशुओ
(१३)	उससे
(१४)	जाता है
(१५)	प्रमुख
(१६)	स्त्री
(१७)	तुझे
(१८)	देने के लिए
(१९)	एक
(२०)	स्थावर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

क्र.	उत्तर
(१)	विकलेन्द्रिय
(२)	तेरह
(३)	लक्ष्मी
(४)	अनुरक्त

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

क्र.	उत्तर	क्र.	उत्तर
(१)	3	(६)	2
(२)	10	(७)	6
(३)	8	(८)	5
(४)	7	(९)	4
(५)	9	(१०)	1

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

क्र.	उत्तर
(१)	4
(२)	8
(३)	8
(४)	24
(५)	100
(६)	16000
(७)	82
(८)	13
(९)	8
(१०)	9

क्र.	प्रश्न-६ ✓ या ×	क्र.	प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	8
(२)	×	(२)	20
(३)	✓	(३)	2
(४)	×	(४)	14
(५)	✓	(५)	5
(६)	✓	(६)	15
(७)	×	(७)	7
(८)	×	(८)	18
(९)	✓	(९)	15
(१०)	✓	(१०)	3

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. Ans. मैं उत्तम जाती का हूं ऐसा अभीमान रखना जाती मद है, ऐसा जाती मद करके हरीकेशी मुनी चांडाल कुलमे जन्मे। आज हमारे जिवन मे नजर डाले तो ख्याल आयेगा की हमारे पुर्वजो के बजाय, हमारे आसपास के लोगो के बजाय, हमारे स्नेही - स्वजन के बजाय हमारे जिवन मे कुछ कमी है, कही खामी है। कभी हमारे से दुसरो के रुप बढ जाते है, हमे अपने रुप मे कुछ नजर नही आती है। ज्यादा खुबसुरत बनने कि कोशीश करते है।

२. Ans. सुक्ष्म काययोग मे रहकर पर्वत कि तरह स्थिर - निश्चल रहना ही शैलेशीकरण है। इस शैलेशीकरण का प्रारंभ कर चौदहवे अयोगी गुणस्थान मे जाने की तयारी करते है। केवली भगवंत जब सुक्ष्म काययोग को रोकते है, तभी आत्मा को शरीर से पृथक करने का महत्व कार्य संपन्न होता है। बाकी कर्मो का क्षय होते ही एक समय मे आत्मा सिद्धशिला पर पहुंच जाती है। १४ वे गुणस्थानक की स्थिती ही पांच ह्रस्वाक्षर अ. इ. उ. ऋ, लृ बोलपाते उतनी ही होती है।

३. Ans. जिव जिस गती उत्पन्न होंगे उस गती कहते है और जिस गती से आके उत्पन्न होगा उसको आगती कहते है। तेउकाय और वायुकाय का गमन पृथ्वीकाय आदी नौ पदो मे होती है। विकलेंद्रिय तिन दंडक की गति पृथ्वीकाय आदी दस पदो मे होती है। गर्भज तिर्यंचो की गति, आगति सब दंडको मे होती है। गर्भज मनुष्य सब दंडकोमे उत्पन्न होते है, तेउकाय और वायुकाय के जीव मनुष्योमे नही जाते। सब दंडको के जिव गर्भज, तिर्यंच गति मे जाते है वैसेही गर्भज तिर्यंच जीव सब दंडको मे उत्पन्न होते है।

४. Ans. भव्य उपासको के सिद्धी, शांति तथा परम प्रमोद देनेवाली तथा सत्वशाली उपासकोको निर्भयता व क्षेम देनेवाली देवी। तुम्हे नमस्कार हो। और तुम जलभय से, अग्नीभय से, विषमे विषधर भयसे, दुष्ट ग्रह भय से, राजभय से, राक्षस के उपद्रव से, शत्रु समुह के उपद्रव से चोर के, शिकारी पशुओं के, भुत, पिशाच तथा शाकीनी के उपद्रवो से रक्षण कर रक्षा करो। उपद्रव रहीत, शांतिकर, शांति-कर, तुष्टी-कर, तुष्टी-कर, पुष्टी-कर पुष्टी-कर क्षेमकर क्षेमकर, हे भगवती। हे गुणवती या लोगो की उपद्रवता शांती, तुष्टी, पुष्टी और क्षेमकर-क्षेम कर।

५. Ans. विस. 1263 मे धर्मघोषसुरी ने प्राकृत मे 'शतपदी' नामक ग्रंथ कि रचना की। अंचलगच्छ की मान्यताओ का स्पष्ट ख्याल इस ग्रंथ पर से आ सकेगा, धर्मघोषसुरीने इन मान्यताओ की समीक्षा आगम आधार रखकर कि है। शतपदी के मंगलाचरण पर से जाना जा सकता है की कोई आचार्य ने मन मे गर्व धारण करके ये पुर्वपक्ष खडे किये। ग्रंथ के आठवे अध्याय मे अंचलगच्छ की समाचारी की अन्य गच्छ की समाचारी से तुलना की। ऐसी तुलना मे लेखक ने कही पर भी हठाग्रह का आश्रय नही लिया है।